प्रश्न : Please remove sc and st reservations in our community.

Sc और st को लेकर आपको जो दुःख है उनकी मुजे फ़िकर है, पर क्या reservations निकल जाएगा तो आपका दुःख मिट जाएगा? आपकी समस्या दूर हो जाएगी? समस्या यह है की हमारी सारी समस्या बाहर है, आप अपनी समस्या परदे पर देख रहे हो, और आप भूल गए हो की परदे पर जो चित्र चल रहा है वो प्रोजेक्टर से निकल रहा है, ऐसा होता है,,,,इसलिए आज फ़िल्म बनाने वाले चल रहे है, यह लोग सम्मोहन करना जानते है, और लोग जानते है यह एक नाटक है पर फिर भी अपने जीवन को बेहोशी से भर देते है, यह भूल जाते है की पीछे परदे पर जो है वो प्रोजेक्टर के कारन है और इस बेहोशी हमें आनंद आता है, तो इसका मतलब यही हुवा की लोग अपने आपको जानबुज कर फ़िल्म बनाने वालों को मंज़ूरी देते है की आप हमें सम्मोहन करो, और जब तक लोग अपने आपको सम्मोहन करने में राज़ी रहेंगे तब तक फ़िल्मे चलती रहेंगी, आज से क़रीबन ७० साल पहले किसिने एक फ़िल्म दिखाई थी सविधान के रूप में,,,,, sc और st इस फ़िल्म का एक भाग है, तो मेरा कहने का मतलब यह है की फ़िल्म दिखाने वालों का दोष नहीं है, बेहोश होने के लिए राज़ी होने वालों का है, और इस दुःख के लिए हम दूसरों को ज़िम्मेवार मानते है, और दूसरों को हम बदल नहीं सकते, हमारा दुःख अगर हम परदे पर देख रहे है तो परदे को कैसे बदला जाए? परदे पर दुःख देखने वाले को अपना रुख ख़ुद की और करना पड़ेगा,,,,,दृष्टि अपनी और करनी पड़ेगी, और आपको अपना रुख बदलने के किसी की रज़ामंदी की ज़रूरत नहीं, क्योंकि हम इंसान है और हमारी निर्णय लेने की शक्ति हमें दूसरे जीवों से अलग करती है, हम यह निर्णय कर सकते है की हमें बेहोशी की तरफ़ जाना है की होश की तरफ़, यह निर्णय दूसरों के लिए नहीं है पर ख़ुद के लिए होगा, अब यहा से अध्यात्म की शुरुआत होती है, अपना रुख अंदर की और करने को ही अध्यात्म कहते है, जिस रास्ते से अंदर की और जाया जाए उसे अध्यात्म कहते है, पर हमें बाहरी रास्ते का ही पता है और अंदर के रास्ते का पता नहीं, तो जो रास्ते का हमें पता नहीं वहा कैसे चला जाए, जो रास्ता हमें दिखाय ही ना पड़ता हो उस पर कैसे चला जाए? और ऐसा तो है नहीं कि रास्ता ही नहीं है, अब तक कई लोग है जो अपनी मंज़िल तक पहोचे है, बुद्ध पहोचे है, महावीर पहोचे है, मीरा पहोची है, सब लोग अपने अपने रास्ते से पहोचे है, और इन लोगों ने हमें होश में लाने के लिए गालियाँ खायी, पत्थर खाए, ज़हर पिए, कोई सुली पर चढ़ गया, और होश में आने का मतलब यही है की हमें सिर्फ़ यह संकेत मिल जाए की एक ऐसी जगह है जहाँ एक प्रेम का ज़रना बहता है,,,,जहाँ अमृत बरसता है जो कहना चाहते थे की एक ऐसी जगह है जहाँ पहोचने के बाद कोई समस्या नहीं है, ,,,तो रास्ता तो है, क्योंकि यह सारे लोग पहोचे है, तो इस संकेत को ही सीडी बना लेना है, और इसके लिए संकल्प लेना होगा, आपको परमात्मा की और जाने के लिए संकल्प लेना होगा, क्योंकि वही जानते है कि हमारा रास्ता कोनसा है, 'वह' राह तक रहा है की कब हमें उनकी याद आ जाए, हम एक क़दम चलेंगे तो 'वह' अपना हाथ पकड़ कर हमें अपनी और खिच लेगा, क्योंकि वह बहोत दयालु है,,,,,जब परमात्मा की बात आती है तो लोग अपने आपमें एक गिल्टी फ़ील करते है, उन्हें ऐसा लगता है परमात्मा तो आसमान जितनी ऊँचाई की बात है, आप सीधा बुद्ध हो जाने की बात करते है,,क्या हम इस क़ाबिल है? ,,,तो इसका जवाब है परमात्मा का हमारी आयडेंटिटी से कोई मतलब नहीं, कोई बड़ा हो या छोटा हो, कोई पद हो या ना हो, धनवान हो या ग़रीब हो, या कोई पुण्यशाली होना पड़ेगा ऐसी कोई बात नहीं है, क्योंकि आप जो अपने आपको समज रहे हो वो आप नहीं है, जो भी आयडेंटिटी आपने बनायी है वो सारी बाहर से आयी हुयी है, और आत्मा identityless है, और संकल्प आत्मा से लिया जाता है, तो अगर आत्मा परमात्मा से मिल जाने के लिए संकल्प ले तो आप

अपने कर्तव्य से मुक्त हो सकते है, आप सिर्फ़ संकल्प ले सकते है, क्योंकि हर कोई लोग अपने जीवन में सुख पाना चाहता है फिर भी दुःख आ जाता है, अगर हमें पता हो क्या करने से सुख मिलता है और क्या करने से दुःख मिलता है तो कोई भी ऐसा कार्य ही नहीं करता की जीवन में दुःख पेदा हो, ,,,इसलिए कुछ तो है जिनसे हम अनजान है और बस अब अनजाना है उनकी तरफ़ जाने के लिए संकल्प ले।

Aasthit